अन्तरा-शब्दशक्ति

नवजीवन

काव्य संग्रह

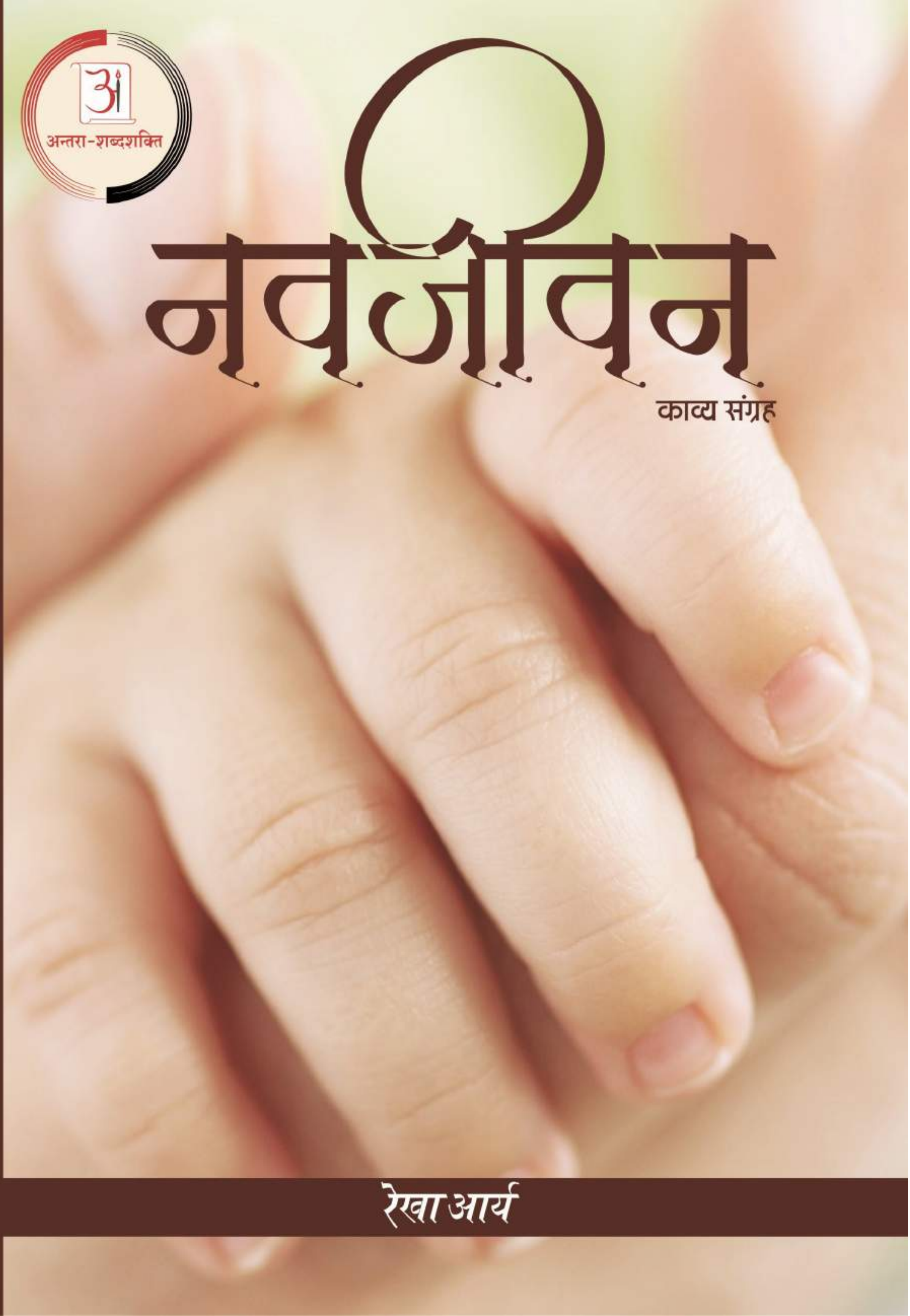

रेखा आर्य

नवजीवन

(काव्य संग्रह)

रेखा आर्य

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

वारासिवनी, मध्यप्रदेश

ISBN- "978-93-5372-011-7"

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

मुख्य कार्यालय - १५ नेहरु चौक वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१

दूरभाष- (कार्या.) ०७६३३-२५३१५९ (मो) ९४२४७६५२५९
अणुडाक- antrashabdshakti@gmail.com
अंतरताना- www.antrashabdshakti.com
प्रथम संस्करण २०१९- रेखा आर्य
मूल्य - ६०.०० रुपये
आवरण चित्र- संदीप सोनी,वारासिवनी
मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी
NAVJEEVAN BY REKHA ARYA
वैधानिक चेतावनी - इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरुत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

अनुक्रमणिका

मन की बात 5

1. किया है प्यार मैंने ख्वाबों से 7
2. तुम्हें पता है रमित 8
3. तुम्हारी यादें संजीवनी है मेरे लिए 9
4. सांसों की लय से बंधी है आस 10
5. मेरी ओर फेंकी एक स्मित मुस्कान तेरी 11
6. सपनो का सावन गुजर गया 12
7. ढूंढ रही थी मैं 13
8. सांसों के लय से बाँधा है मैने 14
9. दीपशिखा 15
10. नमन बारम्बार तुम्हें 16
11. पार्थिव प्रेम 17
12. तेरा स्पर्श 18
13. एक मुलाकात 19
14. हम-तुम 20
15. भागीरथी की गंगा 21
16. प्रीत की बरनी 22
17. बोलो सखी किस नाम का 23
18. कैसे बताऐ 24

19. सर्दरातों में 25
20. एहसास दे देना 26
21. तुम मेरे हो 27
22. अनुभूति 28
23. आलोकिक रूप 29
24. खुद से खुद को पहचानो 30
25. सब कुछ पहले सा ही तो है 31
26. यह आत्म विस्मृति का समय नहीं 32

मन की बात

अथाह समुद्र सा इस जीवन में इन्सान अपने अन्दर बहुत कुछ समेटे रहता है। जीवन में घटित सुख-दु:ख अनेकानेक प्रसंग , देश समाज और अपने आस-पास परिवार में घटित होने वाली घटनाऐं जो हमारे मन को पुर्णत: अपने आगोश में लिए रहती है। कभी-कभी तो कुछ घटनाओं से हमारा जीवन इतना प्रभावित होता है कि मन मस्तिष्क उद्विग्न हो उठता है और ह्रदय में उद्वेलित भावों को वाणी देने के लिए कलम मचल पड़ता है।

शब्दों के माध्यम से अपनी अभिव्यक्ति करने की क्षमता एक कलमकार को विरासत में मिली होती है। सामाजिक आर्थिक वैचारिक स्तर पर हम कितने भी भिन्न क्युँ न हों, एक जैसी परिस्थिति के लिए हमारी प्रतिक्रिया का बेस एक सी ही होती है, बशर्ते हमारी चेतना मानवीय संवेदना से संचालित हो। यही प्रतिक्रिया हमारे अन्तर को झिकझोड़ती हुई कसमसा उठती है और अनुभूतियाँ अवसर पाकर खोये शब्दों को मुर्तरूप देती है। प्रस्तुत काव्य संग्रह इन्हीं भावों को समेटे ये मेरा प्रथम प्रयास "नवांकुर" के बाद दूसरा प्रयास "नवजीवन" है।

वर्तमान परिवेश में नैतिकता के निरंतर पतन, सामाजिक संबधों का बिखराव एवं आत्मिक संबंधों में प्रगाढ़ता को समेटे है। कई बार मेरे शब्द आक्रोशित भी हुए लेकिन समय पर उम्मीद की पतवारों ने दबे पांव जीवन में दाखिल हो हृदय में मंगल भाव भरकर संम्पूर्ण वसुधा को अपने आलिंगन में भर स्नेहा मृत वर्षाने को मजबूर भी किया। भावों की शुद्धता से प्रेम प्रस्फुटित होता है और मैने इन्हीं शुद्धभावों से अलौकिक प्रेमानुभुति को अपने शब्दों का जामा पहनाने की कोशिश की है।

अपने इस प्रयास मे कितनी सफल हो पाई हूँ ये आप सुधि पाठक गण ही तय करेंगे। अपने लेखन को एक नया आयाम देने की कोशिश में मुझे मेरे पतिदेव, बच्चे और निसंदेह मेरे गुरूजनों और माता-पिता का आशिर्वाद शामिल है।

इसे पुस्तक रूप में बदलने के लिए अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन एवं डा० प्रीति सुराना जी को कोटि शधन्यवाद और तहेदिल से आभार। परम पिता परमेश्वर को नमन एवं आप सभी सुधिपाठकों को ढेरों शुभकामनाओं के साथ।

रेखा आर्य

किया है प्यार मैंने ख्वाबों से

किया है प्यार मैंने ख्वाबों से अपने,
एकसे ही तो हैं तेरे-मेरे सपने।
रत्ती भर भी अलग नहीं हैं रमित,
इसीलिये तो सौंप दिया है अपना सर्वस्व तुझे।

युगों-युगों से करती रही हूँ इंतजार तेरा,
आज उन लम्हो को साकार किया हमने।
मैं क्या थी, कौन थी कुछ रहा न याद मुझे
और न जानने की चाहत क्या थे तुम,
बस एक पल में सिमट गया।

पूरा का पूरा ब्रह्मांड हममें जब तुमने अपने मजबूत
आगोश में बांधकर, मुझपर अपने नेह की बरसात की।
सिंदूरी हो उठा था, समस्त अस्तित्व मेरा
जब तुमने अपनी अलौकिकता की रश्मि से
मेरी सूनी मांग को जीवंत किया।

पुलकित हो उठा था रोम-रोम मेरा,
स्तब्ध थी दिशायें खामोश था वातावरण।
गुनगुना रहा था तन-मन और आनंदित हो उठा था मन,
बरस रहे थे प्रेमाश्रु, मगर खामोशी से।

तुम्हें पता है रमित

तुम्हें पता है रमित, जब भी तुम खड़े होते हो,
मेरे समक्ष अपनी बोलती आंखों के साथ।

निःशब्द तुम्हारे लरजते अधरों की भाषा
समझना कठिन नहीं होता मेरे लिये,
क्योंकि सब कुछ कहने और समझने के
लिये शब्दो की आवश्यकता होती ही कहाँ है रमित।

मौन की भी तो अपनी एक संपूर्ण जीवंत भाषा होती हैं न?
कितना समृद्ध मौन होता है उस वक्त जब तुम्हारे-मेरे
कंपित अधरों और नयनो का वार्तालाप होता है।

भीग जाते हैं हम अनायास ही एक दूसरे के स्नेह
सागर में डूबकर, आनंद लेते है और फिर सोचते हैं,
कि हमारी कोई पूर्व पहचान तो नहीं।

फिर भी लगता है, कि जैसे जन्मों-जन्मों का रिश्ता
हो हमारा, जो युगों-युगों से नाना रूप बदलता रहा हो
और हम होते रहे बारंबार अपरिचित और हर बार मिलते
रहे एक नये रूप में, खोज ही लेते हैं न हम रमित।

हर बार एक-दूसरे को एक- दूसरे में,
ये खोज अनंत है, हाँ मेरे रमित-ये खोज अनंत है,
तब तक, जब तक हम पूर्णता नहीं पा लेते।

तुम्हारी यादें संजीवनी है मेरे लिए

तुम्हारी यादें संजीवनी है मेरे लिए,
तुम्हें याद करते हुए भूल जाती हूँ,
सारी परेशानियों को।

कितना निश्चिन्त हो जाती हूँ मैं,
हल्की हो जाती हूँ, रूई की फाहों की तरह।

जीवंत हो उठता है, रोम-रोम मेरा,
ताजगी से भर उठता है मन, कीचड़ में कमल
खिला हो जैसे- वैसे ही परेशानियों में भी खिल उठता है।

मेरा हृदयांगन भर देते हो प्राण वायु,
मेरे अंतस मन में, महसूस करती हूँ।

नई ऊर्जा अंतर मन में, चल पड़ती हूँ फिर से
जीवन के कंटका कीर्ण पथों पर मंजिल के तलाश में।

सांसों की लय से बंधी है आस

सांसों की लय से बंधी है आस,
हर आस से जुड़ा है मेरा विश्वास
और हर विश्वास के साथ करनी है प्रयास।

न हो जाए कोई विपरीत बातें अनायास,
ख्याल रहे रमित, न बनने देना कभी इस
रिश्ते को गलत फहमी का ग्रास,

क्योंकि
हमारा ये रिश्तों का बंधन है बहुत खास,
जो भर रहा है नवजीवन में ऊजास।

हाँ रमित मुझे यकीनन तेरे स्नेह का है आत्मिक
आभास, तुम रहना बनकर हौसला हर पल मेरे पास।

तुम्हारे होने का मेरे साथ ही देता है सुखद एहसास,
तेरी चौखट पर आकर मैं करूं हर पल यही अरदास।

ऐ मेरे रमित सुनो! मिला लेना
तुम अपने रूह के रौशन रवानी में,
मैं घुलकर नूर बन जाऊँ तेरे आँखों के पानी में।

मेरी ओर फेंकी एक स्मित मुस्कान तेरी

मेरी ओर फेंकी एक स्मित मुस्कान तेरी,
भर देती है इतनी उर्जा मुझमें कि बरसो
जागकर इंतजार में थकी आँखे, फिर से स्फूर्त हो जाती हैं।

सदियों का सफर एक पल में पूरा करने को रमित,
मेरी सारी उदासीनता इतने रंगो में प्रस्फूटित होने लगती है,
कि कभी स्वर्णिम ऊषा तो कभी सिंदूरी शाम की तरह
मुझसे रंग उधार लेकर स्वयं को सजा लेती है।

तुम्हारी स्मित मुस्कान की स्मृति मुझे इतनी पूर्णता
से भर देती है, कि हर-पल उसी में जी लेती हूँ मैं।

अंतराकाश का धुंधलका अचानक तेरी अरूणाई
मुस्कान से जगमगा उठता है, निखर गई हूँ मैं, संवर गई हूँ मैं।

तुमने मुझे अपनी राग मई स्वराधना की
अंजुरी से सराबोर कर दिया है, मुझे ऐसे फैला दिया है,
चहुं ओर प्रीत पटल पर, जैसे शबनम बिखर पड़ी हो दूब पर।

आल्हादित बावरा सा मन मेरा थिरकने लगा है,
पहनकर अल्हड़ता की पैजनिया, नाच उठा है मन
मयूर मेरा, तेरी स्मित मुस्कान की स्मृति से सदा के लिये।

सपनो का सावन गुजर गया

सपनो का सावन गुजर गया, पतझड़ का मौसम छाया है,
उम्मीदो का मौसम इन आंखों में मधुमास लेकर आया है।

जबसे तुम गये हो साजन, मन अश्रु-रंगो में नहाया है,
विरह व्यथा के स्याह रंग से,होली रंग भी शरमाया है।

लाल, हरा और पीला-नीला क्या करना इन रंगो का,
बेचैन व्यथित हृदयांगन मेरा, तेरी प्रीत संग नहाया है।

बेचैन बादलो सा मन मेरा अशांत पवन के झोंको सा,
शुष्क पड़े पर्वत सा देखो इंद्रधनुष है शरमाया।

आ भी जाओ अब तो साजन प्रेम पुलक हरसाया है
नव पल्लव और नव पुष्पो पर प्रीत रंग वर्षाया है।

बाट निहारूं प्रियतम मेरे रंगो का श्रृंगार लिये
सराबोर करदो तन-मन आकर बांहो का तुम हार लिये।

ढूंढ रही थी मैं

अपने अन्दर उस असीम खुशियों के सागर को,
जिसमे दुःख के छोटे –छोटे नदी-नालों में भरा
ताप, संताप, पीड़ा सब मिनटों में समाहित होकर विलिन हो जाऐ।

मिल गया पथ उस अनन्त खुशियों के सागर का,
प्यार से भरे गागर का, खुदको खुद में खो बैठी थी।
त्याग बलिदान और प्यार की देवी बनने की चाह में,
अपने पथ से भटक चूकि थी, खो सी गई थी खुदमें अपने ही जिस्म में।

दफन सी हो गई थी मैं, त्याग बलिदान समझौता
सब बेमानी सी लगती है, दुःखों के इस छोटी –छोटी नदी-नालों को
अपने जिस्म में दफन कर, आज की हर नारी महान बनना चाहती है।

अपने घर में, समाज में, अपने आस-पास के लोगों में,
हरवक्त त्याग और त्याग, कभी बेटी बनकर, तो कभी बहू, पत्नी
माँ और सामाजिक प्राणी बनकर भी क्यूँ करें हम त्याग हर सूरत में।

जबकि अन्तर्मन इस पीड़ा से बुरी तरह जख्मी
हो चुका है, कभी जो हंसकर खुशी-खुशी किया
करती थी, वही आज असहनीय पीड़ा दे रही है, दम घुट
सा रहा है, पीड़ाऐं सड़ चूकी है, जमा होकर, जरूरत है
पीड़ाओं के इस नदी को प्यार के असीम सागर से मिलाने का।

सांसों के लय से बाँधा है मैने

सांसों के लय से बाँधा है मैने,
तेरे होने का सुबूत, तभी तो
हर धड़कन से सुन पाती हूँ तुझे।

समाधि स्थनर हो तुम आँखें खोलो अपनी,
देखो तो जन्मों–जन्मों से पलकें बिछाये बैठी हूँ मैं।

प्रकाश की एक छोटी सी बिन्दु
जो खुदको खोकर फिर से जीना चाहती है तुझमें।

तुम्हारे विस्तृत भुजाओं में समाहित हो
उस दिव्य प्रकाश का अंश बनकर।

आँखें खोलो सखे, आओ और मुझे अपने
आगोश में भरकर अपनी तपिश से
सोख लो, मेरी बिन्दु समाहित कर लो खुद में,
हो जाऐंगे एकाकार हमेशा के लिए।

दीपशिखा

दीपशिखा सी प्रज्वलित,
मेरे रोम छिद्रो से निकलती
तपिश भी सीधे तुम तक पहुँचती है रमित।

तभी तो मेरे रोम-रोम से,
उठ रही बिरह के ताप से,
दग्ध होते हो तुम भी।

तड़प उठता है तेरा मन आ
जाते हो मेरे अन्तस को शीतल करने,
मेरी चेतना को सहलाने
ध्यानस्थ हो आत्म लीन हो जाने।

तुमसे मौन वार्ता आत्मिक उपलब्धि है मेरी,
तुममें ही खोये रहना सुनना, महसूस करना
और तेरी ही नजरों से पूरे ब्रह्माण्ड को निहारना।

तुमसे एकाकार होकर तुझमें ही विलीन हो जाना,
मेरी जन्मों-जन्मों की तपस्या का फल है रमित।

नमन बारम्बार तुम्हें

ये जो तेरे जिस्म में कैद मेरी रूह है न रमित,
घुलकर पिघलने लगी है, तुम्हीं से आच्छादित
शिखर प्रमाण है इसका, तेरे जिस्म के साथ घुलकर।

ये जो रूहानियत का सैलाब घाटियों
में उतर आया है, निर्मल, स्वच्छ, कल-कल
करती हुई उन्मादित हो नर्तन कर रही है।

ये प्रमाण है उस अलौकिक मिलन का,
एकाकार हो गए तुम्हारे जिस्म से होकर
मेरी रूह को भिंगोती मुस्कुरा रही है।

पर्वतों के ओट से भोर की पहली किरण बनकर
गुदगुदा रही वसुन्धरा को संदेश देर ही प्रेम के
अलौकिक मिलन का, जिस्म से होकर रूह तक का सफर।

फर्स से अर्श को छुनेका हुनर, जानते हो
न रमित, तुम्हें पाकर मैने सब कुछ पा लिया है।

लौकिक इच्छाओं से परे, अलौकिकता के सफर में,
अब तुम जो मेरे साथ हो, नमन बारम्बार तुम्हें मेरे रमित।

पार्थिव प्रेम

गुनगुनाओ कुछ ऐसा कि धरती
भी नृत्य करने लगे हमारे साथ, हमारा जो
ये सम्बन्ध है न रमित, भौतिक जगत से परे।

पनपी है वहाँ-जहाँ से होता है
प्राण वायु का संचार, जहाँ गुनगुनाती
है दिशाऐं, नृत्य करती है हवाऐं और वाद्य
यंत्र सी बज उठती है पत्तों की सरसराहटें।

विचरण कर रही उन्मुक्त होकर हमारा
ये सम्बन्ध, आगोश में कहाँ समायेगी अब?

बना जो लिया है निलय इस पूरे ब्रम्हाण्ड को सखे,
फिर भी, तुझे सुनने को आतुर मेरे हृदय का स्पंन्दन।

सजग रहता है हर छण, प्रेम अपार्थिव
होकर भी, हो उठता है, पार्थिव और मुर्तिमान।

तेरास्पर्श

तुम वो फलदार वृक्ष की तरह हो,
जिसके छांव तले ध्वस्त, नेस्तेनाबुत
दरख्तों को भी फिर से पनपने का विश्वास पुख्ता होता है।

अंकुरित होने लगते हैं फिर से, "छत्त-विछत्त"
आत्माओं के मध्य प्रस्फुटित जीवन, बिहुंसने का
मन बना लेता है अपने हृदय में।

धधकती अग्नि को पतवार बना,
पार कर लेगा ये भव सागर बदहवास
दुनियाँ को तेरे स्पर्श का मरहम ही बचा सकता है।

मैं निश्चिंत तो उसी दिन हो गई थी,
जिस दिन तुमने अपने हृदय के तपिश को
रखा था, मेरी हथेलियों पर, सजा ली थी मेरे
धड़कनो की धक-धक अपने अधर के मुस्कान पर।

चलो मिलकर दुनिया की जख्मों पर मरहम
लगायें, बहुत जरूरत है, इन्हें मरहम का और
वह मरहम कुदरत ने तुम्हारे रूप में, मेरे पास भेजा है।

प्यार कभी व्यक्तिगत नहीं होता वह तो दो दिलों
को जोड़ता, गुन नफल हो सार्वजनिक हो जाया करता है।

एक मुलाकात

प्रीत हुई है तुमसे जैसे मैं दीपक तुम बाती,
जैसे रह जाता है अधुरा, बिन मोती के माला।
वैसे ही हम-तुम से मिले हैं, सुई के संग ज्यों धागा।

तुम थे अधुरे मुझ बिन प्रियतम,
मैं भी नहीं थी पूरी, बरसों से हम मिले न बेसक,
थी दूरी की मजबूरी रूह का बंधन टूट न पाया
मैं राधा तू मोहन प्रियतम नाच उठा है जीवन।

रीत नुरानी आसमान की, जमीं पे जुड़े नहीं प्रीत,
रूह से रूह का मिलन तो होगा, बन मंदिर का गीत मोहन।

नाच उठा है जीवन एक दूजे से जुड़ा न रिश्ता,
बने नहीं मनमीत, जुड़ना था जब रूह से रूह को।

कैसे होती प्रीत मोहन, मैं मन मंदिर की तेरी
दीपक लौ की, तुम संगीत प्रियतम नाच उठा है जीवन।

प्रेम की डोरी बंधी है तुम संग, जैसे जल और मीन,
पाक सा रिश्ता तेरा मेरा, यूँही आधा-आधा पूरा।।

हम-तुम

अलौकिकता से परिपूर्ण तुम्हारे होने
का एहसास, अरूणोदय की लाली
सी सुखद मन्द पवन का स्पर्श।

पत्तों के सरसराहट से निकली ध्वनि,
अद्भुत कर्ण प्रिय मदहोशी में नृत्य करता।

रोम-रोम जैसे शरत पुर्णिमा इन्दू से,
बरसता अमृत पानकर बौराया हुआ है।

जैसे राश करती गोपियाँ, भूल जाती
हो सब कुछ समर्पित है सभी श्री कृष्ण को।

ठीक वैसे ही तो कल की रात शरत पुर्णिमा थी,
बरसा गई अमृत, दे गई हर पल साथ होने का एहसास।

तृप्त हुआ रोम-रोम कर शुधा पान,
हो इष्ट से एकाकार मिल गया कण-कण
में बन अणु परमाणु हम -तुम।।

भागीरथी की गंगा

जब अवतरित हुई होगी गंगा,
स्वरूप उसका बिलकुल तुम्हारी तरह होगा।

निरभ्र अम्बर सा उज्जवल श्वेत, धव-धव
पवित्र स्फटिक शिला की तरह निर्मल।
तुम्हारे हृदय की तरह ही पारदर्शी,
आवाहन में स्नेह की शक्ति प्रणम्य है।

तुम्हारी ही आल्हादिनी में जब तुम उतरते हो स्नानार्थ,
मुझे लगता है, कि गंगा तुम्हें नहीं, तुम गंगा को स्नान करा रहे हो।

तुम्हारे ब्रम्हचर्य के तेज के सम्मुख कितनी
फीकी लगती है, अम्बर की नीलिमा, तुम्हारी
मणि-कांचन स्फूर्ति मेरे भीतर सृष्टि कर रही है।

विलक्षण अमृतमयी धारा को, कि तुम्हारा स्पर्श
पाने के लिए, उतर रही हूँ जल बनकर, प्राणे स्वर।

करो मुझे आत्म सात, आत्म समर्पण की मुद्रा में
पहुँच कर विलिन हो जाना चाहती हूँ, तुम्हारे रोम-रोम में।
रूधिर बनकर बहना चाहती हूँ,
तेरे जीवन की निर्मल प्रवाह में प्रेम के पराकाष्ठा तक।

प्रीत की बरनी

मैं पिया के गांव जाकर प्रीत नेह का बांध आई,
अंक भरने का निमंत्रण आज मैं स्वीकार आई।

नेह के आँगन में जाकर प्रीत रस में डूब आई,
अब कहीं सूखा नहीं है, छाई फिर से तरूणाई।

हे रमित ! सर्वेस्वर मेरे तुमने मुझको क्यूँ सजादी,
हो यहाँ सदियों से तुम तो एक भी क्यूँ नस दादी।

अब बची कुछ बूँद ही तो मेरे जीवन का प्रहर है,
युग युगान्तर से ही खाली प्रीत की बरनी पड़ी है।

कैसे भर पाओगे इतना, जो मेरे हिस्से बची है,
रश्मि रथ पे आके अपने अंको का आल्हाद दे-दो।

झंकृत हो जाए शिराऐं, रूधिर का वो धार दे-दो
प्रीत रस से भींगे तन-मन वो मुझे रसधार दे-दो।।

बोलो सखी किस नाम का

लगा लिया है काजल तुने, बोलो सखी किस नाम का,
किसका रस्ता देख रही हो, बेचैन सी कल शाम का।

कौन समाया दिल में तेरे, होंठों पे है मुस्काया,
खुश किस्मत वो कौन है बोलो, पलकों पर आकर छाया।

कौन है जो बेखबर है अबतक, तेरे लबों के जाम से,
लगा लिया है काजल तुने, बोलो सखी किस नाम के।

देखा तुने जो सपना था, वो तेरा कोई अपना है,
बिरहा अग्नि के लपटों में कब तक तुमको यूँही तपना है।

है कौन सखी अंजान, जो है तेरे प्यार के पैगाम से,
लगा लिया है काजल तुने, बोलो सखी किस नाम के।

दिल का सब से खाश है वो, बनके धड़कन तेरे पास है वो,
अँखियों का नूर बना वो तेरा, तेरी प्यार भरी एहसास है वो।

कौन है वो जो नजर बचाये तेरे नयनों के पैगाम से,
लगा लिया है काजल तुने, बोलो सखी किस नाम से?

कैसे बताऐं

आके बैठे हो कब से
हृदय में, तुम्हें कैसे बताऐं।
तुम्हारे अक्स से
तुमको ही हम कैसे मिलाऐ?

गिरे जो आँखों से आँसू
बहुत तुम याद आये,
कबसे भूले हो मुझको तुम,
तुम्हें कैसे बुलाऐं।

मिलके भी कभी न
मिल सके कैसे बताऐ,
मेरी हर साँस में घुल से
गये हो तुम, तुझे कैसे समझायें।

कितना पागल है दिल मेरा,
तुझे कैसे सुनाऐ कहो न,
यादों की चिता अपने ही
हाथों से भला कैसे सजाऐं?

सर्द रातों में

मेरी रातों की खामोशी में दिल का तुम संगीत बनो,
मत दूर रहो तुम मुझसे जीवन का सच्चा प्रीत बनो।

रोम-रोम में बस जाओ तुम महक उठो मेरी साँसों में,
काली स्याह सर्द रातों में, तन्हाई से लिपटी तेरी यादों में।

गुम-सुम सी खामोश खड़ी मैं , बात करती तेरी बातों से,
बूँद-बूँद है नीर नयन में, आकुलता है व्याकुल मन में।

तुम दूर गये हो जबसे साजन, है प्राण नहीं अब इस तन में,
एक बार सही पर आ जाओ तुम मिलने मुझसे ख्वाबों में।

पगली पवन जब छूकर गुजरे, रोम-रोम यूँ सिहर उठे,
नीर भरे दो नयन कलश तेरी यादों में छलक उठे।

तेरे प्यार की निर्मल सरिता वह उठती है मेरी आँखों से,
काली स्याह सर्द रातों में आकर घुल जाओ न मेरे तन-मन में।

एहसास दे देना

लगाकर गले से मुझको सनम प्यार के सारे तुम
एहसास दे देना, गा उठेंगे मेरे दिल की धड़कने
सभी साँसों को मेरी तुम, वो साज दे देना।

थामकर हाथों में अपने हाथ मेरा, हर सफर
में मेरा तुम साथ दे देना, राहें खिल जाएगी
जिन्दगी की सभी, मेरी राहों को तुम अंजाम दे देना।

लगाकर पलकों को मेरी अपने होंठों से छूकर,
अपनी आँखों के सारे ख्वाब दे देना, बूँदें शबनम
की पाक हो जाएगी, अपने अश्कों का मुझको जाम दे देना।

लगाकर
ठहर जाऊँ जो मैं जिन्दगी के सफर में, उम्मीदों
का रौशन चिराग दे देना, शब-ए-जिन्दगी के
अंधेरों में भी जुगनुओं की मुझको तलाश दे देना।

होगी पूरी हसरतें मेरे दिल की, बस इतना सा मुझको विश्वास दे देना,
लगाकर गले से मुझको सनम प्यार के सारे तुम एहसास दे देना।

तुम मेरे हो

ये कैसा है प्रीत हमारा, शब्दों से प्रस्फुटित होगा,
एक दूजे की अन्तर्व्यथा को मौन की सिसकी गिन न सकेगा।

उपर की खुशियाँ साथ रही, सिसकू में दबी जज्बात रही,
तुम, तुम न रहे मैं, मैं न रही, जब हृदय क्रन्दन कर पुकार रही।

तुम समझ न पाये मेरा मन, अनजान रही मैं भी तुमसे,
यूँ अंतस उलझन खोली मैं, हैरान रहे तुम भी मुझसे।

जो सत्य है वो नहीं बदलेगा, दिवा स्वप्न का मोल ही क्या,
जो होना है हो जाएगा, फिर रोना और रूलाना क्या?

एक पल में सौ-सौ बार मरी, एक बात पे सौ-सौ बार अड़ी,
तुम मेरे हो मेरे ही रहो, क्यूँ तन्हाई पीछे है खड़ी?

अनुभूति

प्रेम एक आत्मिक अनुभुति, भावों से सिंचित प्रवाह,
शब्दों से परे अभिव्यक्ति, जीवन के किसी भी पड़ाव पर
हो जाने वाला एक अद्भुत अलौकिक संयोग।

स्पर्श, गंध मिलन से परे, अनायास ही घटने
वाली एक ऐसी घटना, जो पलक झपकते ही बदल
दे इतिहास और स्वयं को स्वयं में, तृप्त करने की चाहत में।

सृजन करले एक गुप्त साम्राज्य लगा दे पहरेदारी,
अपने सतीत्व पर त्याग दे खुद से खुदका लोक लाज,
बंद कर ले खुदको प्रेम की नगरी में, प्रकृति के कण-कण से।

आँखें बंद कर महसूस करने लगे,
प्रेम, प्रेम, प्रेम और सिर्फ प्रेम की खुशबू को।

अँजुरी में भरकर चुल्लु-चुल्लु नहीं,
डूबकर प्रेम के समुद्र में, तृप्त होने की अनुभूति करनी है।

आलोकिक रूप

साक्षात प्रेम की देवी के प्रेमाश्रु से
पादुर्रभाव हुआ है तुम्हारा ये आलोकिक रूप।

स्फटिक सा पारदर्शी और निर्मल,
अश्रु-कण सा शांत और शीतल।

स्वच्छ, निर्मल और गंगा जल सा पावन,
अरुणोदय की लालिमा सी लिये है तुम्हारा ललाट
साफ झलकती हूँ, भृकुटी के संकुचन के मध्य उभरती हुई मैं।

जैसे तुमने मुझे अपने विजय
तिलक के स्थान पर धारण कर लिया हो।

जैसे शामिल कर लिया हो मुझे
अपने ऐकांत साम्राज्य में साये की तरह।

तुम्हारे प्रेमाश्रु की बारिश में घुल सा गया है,
मेरा अस्तित्व जैसे बारिश की बूंदो से अश्रु-कण ढूंढना
जितना मुश्किल है, ठीक उतना ही कठिन है रमित।
मुझे स्वयं में ढूंढना और तुमसे मुझे जुदा करना।

खुद से खुद को पहचानो

निश्छल भाव से करती हो सेवा,
कौन समझता है, तुम्हारा समर्पण?

सृष्टि की निर्मात्री हो तुम, अपने वजूद
के खातिर, अक्सर लड़ने वाली हो तुम,
फिर क्यूँ खामोशी से इतना सहती हो तुम।

कांटो भरे जीवन में पलती हो तुम, मतबनो
मीरा विष पान करने को, मत बनो राधा सिर्फ
प्रेम निभाने को, मत बनो तुम सीता सिर्फ दु:ख सहने को।

नहीं बनी हो तुम सिर्फ अग्नि परीक्षा देने को, क्यों
इतनी वेदना सहती हो तुम, नर ये नारायण तक की
जननी हो तुम, पिता, पति, भाई, बेटा सबको प्यार करती हो तुम।

क्यूँ बन उर्मिला पलकें गीली करती
हो तुम, सुभद्रा, महादेवी, सरोजनी सी
सुरीली बनो, पूजनीया हो तुम, वंदनीया हो तुम।

शिवाजी महाराणा की जननी हो तुम,
होते अत्याचारो पर अकेली भारी हो तुम।

सब कुछ पहले सा ही तो है

सब कुछ पहले सा ही तो है,
पर आज की शाम थोड़ी रिक्त है।

मैं गुम-सुम तन्हा तन्हा हूँ,
कुछ तो है जो अजीबसा है,
दिल में हैं बेचैनियाँ और बढ़ रही हैं,
बेताबिया गम के साये थोड़ी दूर हैं।

पर यादें बड़ी करीब हैं,
अश्को से भरी हैं आँखे मेरी,
पलके बेहद गमगीन हैं, मुस्कुराहट खो गई है।

अधरों पे सोई पीड है,
साथ न होकर भी कोई है तो मेरे आस-पास,
मैं खुश भी हूँ और उदास भी, ये कैसा मेरा नसीब है।
ये कैसा है अहसास।

यह आत्म विस्मृति का समय नहीं

यह आत्म विस्मृति का समय नहीं है रमित,
उठो और सब दुरूस्त कर दो फिर से जिस्म तो
अभी भी जिंदा है, भले ही रूह को खींचकर निकाल लिया हो तुमने।

धड़कनो का शोर कभी तीव्र कभी मंद हो जाता है जैसे,
तुम्हारी आँखे अठखेलियाँ करती है मुझसे ऐसे।

आँखे विरान हैं, पर न जाने कैसे तुमने सुन सान जंगल
में यादो का बिछौना फूलो के बगीचे में बिछा दिया है।

विरानी को ताकती पत्थर हो चुकी आँखे मेरी,
बस हर दम तृष्णा रहती है तुम्हें देखने की,
शीघ्र आओ मेरे अधरों को अपनी मुस्कान का लिबास पहनाने।

रूंह को प्रेम में डूबे बरसो गुजर गये हैं,
तुम मिले थे जब मुझसे प्रेम की बरसात में भीगे जरूर
थे हम दोनो, पर तृप्ति तो तभी मिलेगी जब तुम्हारे प्रेम
रूपी बरसात की बौछार मेरी मरणासन्न उम्मीदो पर
बरस करसराबोर कर देगी मेरे तन और मन को सदा के लिये।

मुझे फर्श से अर्श तक के सफर में कहीं भी
तुम्हारी आत्म विस्मृति किसी भी रूप में मंजूर नहीं है रमित।

व्यक्तित्व दर्पण

नाम - रेखा आर्य

जन्म - 25 मई 1974, बिहार

शिक्षा - स्नातकोत्तर (दर्शन शास्त्र, मनोविज्ञान)

पता - बहादुरगढ़ (हरियाणा)

ई मेल - riyariddhi927@gmail.com

प्रकाशन - नई रोशनी नई पहल, नया उडान नया आसमान, आराध्या, किसलय (साझा संकलन), नवांकुर (काव्य संग्रह), प्रजातंत्र का स्तंभ राष्ट्रीय पत्रिका, चौथी अदालत, बिदेशिया आदि पत्रिकाओं में रचनाऐं प्रकाशित,

सम्मान - साहित्यकार सम्मान, प्रजातंत्र का गौरव सम्मान, डॉ. सतीश साहित्य सम्मान, अन्तरा शब्दशक्ति सम्मान, हिन्दी रत्न सम्मान, सरस्वती सम्मान इत्यादि।

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी ।

अन्तरा शब्दशक्ति

www.antrashabdshakti.com

१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी,
जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१,
संपर्क- ९४२४७६५२५९,
अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

978-93-5372-011-7

मूल्य- 60/-